भूमिका

हिंदी की तरह भोजपुरी भाषा में भी आठ प्रकार के शब्द-भेद देखे जा सकते हैं, जो इस प्रकार है- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया-विशेषण, संबंध-बोधक, समुच्चय-बोधक, विस्मयादि-बोधक। रूपांतरण के आधार पर शब्द के दो भेद होते हैं- विकारी और अविकारी। जिन शब्दों के रूपों में लिंग, वचन और कारक के कारण विकास (परिवर्तन) होता है, उसे विकारी कहते हैं। विकारी के अंतर्गत संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया शब्द-वर्ग आते हैं। जिन शब्दों के रूपों में लिंग, वचन और कारक के अनुसार कोई परिवर्तन नहीं होता है, उसे अविकारी कहते हैं। अविकारी के अंतर्गत क्रिया-विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक और विस्मयादिबोधक शब्द-वर्ग आते हैं।

भोजपुरी में मुख्यतः संज्ञा, क्रिया, विशेषण शब्द-भेदों के शब्दरूप बनते हैं। प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध 'भोजपुरी संज्ञा एवं विशेषणों का रूपप्रक्रियात्मक जनित्र' के अंतर्गत संज्ञा एवं विशेषणों के अलग-अलग रूपों का विश्लेषण कर इसके लिए रूपप्रक्रियात्मक जनित्र का विकास रूपसाधक रूपों (Inflectional Forms) के लिए किया गया है। संज्ञा एवं विशेषणों के मूल रूप में विभिन्न प्रत्यय लगाकर इनके अलग-अलग रूपों का निर्माण किया जाएगा तथा साथ ही यह भी ध्यान दिया जाएगा कि इनके रूपों में परिवर्तन हो लेकिन वह अपना कोशीय अर्थ न बदले।

जैसे- 1. भोजपुरी में संज्ञा- लइका: लइकवे, लइकवो, लइकवन, लइकवने, लइकवनों, लइकवा।

2. भोजपुरी में विशेषण- नीमन: नीमनका, नीमनके, नीमनको, नीमनकी, नीमनकिए, नीमनकियो, नीमनकन, नीमनकिन।

प्रस्तुत शोध में गुणात्मक शोध प्रविधि का उपयोग किया गया है। इसमें भोजपुरी संज्ञा और विशेषण से संबंधित स्थितियों और नियमों का वर्णनात्मक रूप से विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को चार अध्यायों में विभाजित किया गया है, जिसके अंतर्गत निम्नलिखित बातों को समाविष्ट किया गया है-

प्रथम अध्याय के अंतर्गत 'भोजपुरी भाषा: परिचय एवं स्वरूप' में भोजपुरी भाषा का परिचय दिया गया है तथा इसके साथ-साथ भोजपुरी भाषा के क्षेत्र विस्तार पर भी बात की गई है। इसके साथ-साथ 'भोजपुरी भाषा का भौगोलिक वर्गीकरण' तथा 'भोजपुरी की बोलियाँ या विभाषाएँ' के बारे में भी बात गई है। आगे 'भोजपुरी भाषा का साहित्य' के अंतर्गत भोजपुरी भाषा की साहित्यिक पृष्ठभूमि के बारे में भी विस्तार से चर्चा की गई है।

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत 'संज्ञा: स्वरूप एवं प्रकार' पर चर्चा की गई है। जिसमें संज्ञा का स्वरूप और परिभाषा को भी परिभाषित किया गया है। संज्ञा के प्रकार/भेद पर भी बात की गई है तथा इसके साथ

ही संज्ञा और व्याकरणिक रूप के अंतर्गत संज्ञा रूप, लिंग, वचन, कारक पर विस्तार से चर्चा की गई है। डाटाबेस का निर्माण के अंतर्गत संज्ञा_शब्द रूप टेबल और संज्ञा_रूपावली टेबल का भी निर्माण किया गया है।

तृतीय अध्याय के अंतर्गत 'विशेषण: स्वरूप एवं प्रकार' पर चर्चा की गई है। जिसमें विशेषा का स्वरूप और परिभाषा को भी परिभाषित किया गया है तथा इसके साथ-साथ विशेष्य और प्रविशेषण के बारे में भी चर्चा की गई है। विशेषण के प्रकार/भेद पर भी बात की गई है तथा इसके साथ ही विशेषण और व्याकरणिक रूप के अंतर्गत विशेषण रूप, लिंग, वचन पर विस्तार से चर्चा की गई है। डाटाबेस का निर्माण के अंतर्गत विशेषण_शब्द रूप टेबल और विशेषण_रूपावली टेबल का निर्माण किया गया है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत 'डाटाबेस और टूल निर्माण' की प्रक्रिया के बारे में चर्चा की गई है। जिसमें डाटा का संग्रह कैसे किया जाता है तथा इसके साथ ही प्रोग्राम विकास कार्य के अंतर्गत फ्लोचार्ट, सी. शार्प प्रोग्राम, प्रोग्राम कोड और प्रोग्राम का आउटपुट आदि का व्यवस्थित विवरण प्रस्तुत किया गया है।

साहित्य पुनरावलोकन-

इस लघु-शोध कार्य को संपन्न करने में विभिन्न सहायक-सामग्री की सहायता ली गई है, जिनमें हिंदी और भोजपुरी की पुस्तकों का पुनरवलोकन किया गया है, जिसका विवरण इस प्रकार है-

कामता प्रसाद गुरु (2012) ने **हिंदी व्याकरण** में संज्ञा और विशेषण को क्रमबद्ध रूप से व्यवस्थित किया है, जो इस इस प्रकार से है-

1. संज्ञा के अंतर्गत संज्ञा की परिभाषा को परिभाषित किए हैं तथा साथ ही उन्होंने संज्ञा के दो भेद किए हैं- पदार्थ वाचक और भाववाचक।

2. पदार्थ वाचक संज्ञा के अंतर्गत दो भेद दिए हैं- व्यक्तिवाचक और जातिवाचक।

3. विशेषण के अंतर्गत विशेषण की परिभाषा को परिभाषित कराते हुए विशेषण के तीन भेद किए हैं- सार्वनामिक, गुणवाचक और संख्यावाचक।

4. व्युत्पति के आधार पर सार्वनामिक विशेषण के दो भेद किए हैं- मूल सार्वनामिक विशेषण और यौगिक सार्वनामिक विशेषण।

5. संख्यावाचक विशेषण के भी दो भेद किए हैं- निश्चित संख्यावाचक, अनिश्चित संख्यावाचक और परिमाणबोधक।

6. उन्होंने लिंग, वचन और कारक पर भी विशेष रूप से सविस्तार वर्णन किए हैं।

जय कान्त सिंह (2013) ने **मानक भोजपुरी भाषा, व्याकरण आ रचना** में संज्ञा और विशेषण पर विस्तृत रूप से वर्णन किया है जो इस प्रकार है-

1. संज्ञा के अंतर्गत संज्ञा की परिभाषा को परिभाषित किए हैं तथा साथ ही उन्होंने संज्ञा के तीन भेद किए हैं-व्यक्ति वाचक संज्ञा, जाति वाचक संज्ञा और भाववाचक संज्ञा।

2. जाति वाचक संज्ञा के अंतर्गत तीन भेद दिए हैं- संख्येय पदार्थ वाचक संज्ञा, परिमेय चाहे तौलनीय पदार्थ वाचक संज्ञा और समूह चाहे समुदाय वाचक संज्ञा।

3. भोजपुरी में संज्ञा के तीन रूप होते हैं- सामान्य या लघु रूप, गुरु रूप और गुरुतर रूप।

4. विशेषण के अंतर्गत विशेषण की परिभाषा को परिभाषित करते हुए विशेषण के दो भेद किए हैं-संज्ञा विशेषण और क्रिया विशेषण।

5. प्रयोग के आधार पर संज्ञा विशेषण के पाँच भेद किए हैं- सार्वनामिक विशेषण, गुणवाचक विशेषण, संबंध वाचक विशेषण, संख्या वाचक विशेषण और परिमाण वाचक विशेषण।

उदय नारायण तिवारी (2011) ने **भोजपुरी भाषा और साहित्य** में संज्ञा और विशेषण को क्रमबद्ध रूप से व्यवस्थित किया है।

1. संज्ञा के रूपों का वर्णन विस्तृत रूप से किए हैं। मागधी-प्रसूत अन्य भारतीय आर्य भाषा की भाँति ही भोजपुरी में भी पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग संज्ञा पदों के रूपों में कोई अंतर नहीं है, दोनों लिंगो के रूप समान ही है।

2. इस पुस्तक में भी संज्ञा के तीन रूप दिए हैं- लघु, गुरु और अनावश्यक।

3. भोजपुरी में संज्ञा पदों की भाँति, विशेषण के तीन रूप बताए हैं- लघु, गुरु और अनावश्यक।

डॉ. शुकदेव सिंह (2009) ने **भोजपुरी और हिंदी** में संज्ञा और विशेषण पर विस्तृत रूप से वर्णन किया है, जो इस प्रकार से है-

1. संज्ञा प्रातिपदिक के बारे में विस्तृत रूप से वर्णन किए हैं, जिसमें उन्होंने स्वरांत और व्यंजनांत का वर्णन किए हैं।

2. संज्ञा रूप के साथ-साथ लिंग और वचन का भी सविस्तार वर्णन किए हैं।

3. कारक की परिभाषा को परिभाषित करते हुए कारक के प्रकार को भी विस्तार रूप से बताए हैं।

4. विशेषण के अंतर्गत विशेषण की रचना को बताए हैं तथा साथ ही उसके दो रूप मूल और तिर्यक रूप के बारे में गहनता से वर्णन किए हैं।

5. विशेषण के तुलनात्मक कोटियों को भी सविस्तार वर्णन किए हैं।